अध्याय ७

निष्कर्ष

जैसा की अध्याय ३, साहित्य पुनरवालोकन और अध्याय ५ नगर ,जाति और अधिवास से स्पष्ट हो रहा है कि नगरों और ग्रामीण क्षेत्रों में कई प्रकार कि विभिन्ताओं में से अधिवास, जातीय समीकरण, बसावट , संस्कृति इत्यादि महत्वपूर्ण हैं| इन सभी को समझने हेतु यह आवश्यक है कि हम सर्वप्रथम ये जाने कि नगर और ग्रामीण क्षेत्र में मुख्य अंतर क्या है?

➢ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में अन्तर

विश्व के सभी समाजों में सामुदायिक जीवन के दो स्वरूप ग्रामीण एवं नगरीय स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। इन दोनों प्रकार के सामाजिक जीवन की अपनी विशेषताएँ हैं जिनहें हम ऊपरी तौर पर आसानी से पहचान सकते हैं।इन दोनों समुदाय में रहने वाले लोगों की प्रकृति में सामानयतया क्रियाकलापों,रहन- सहन,जीवनशैली एवं प्रकृति से निकटता में स्पष्ट भेद देखने को मिलता है।

वास्तव में नगरीय एवं ग्रामीण दो भिन्न प्रकार की जीवन पद्धतियों को प्रदर्शित करते हैं, न कि भौगोलिक स्थिति को। सपष्ट है कि आम स्तर पर दो भिन्न प्रकार के समुदायों की स्पष्ट अलग प्रकार की जीवन पद्धतियाँ होने के बाद भी सूक्ष्म स्तर पर इन्हें अलग-अलग परिभाषाओं में बांधना बहुत मुश्किल है। इस प्रकार हम देखते हैं कि दो सरल-सी अलग-अलग दिखने वाली वस्तुओं में अंतर करना आसान नहीं है । वास्तव में एक विशेषता जिसे हम गाँवों के लिये निर्धारित करते हैं, कभी-कभी नगर में भी देखने को मिल सकती है और इसके विपरीत नगरीय तत्व के दर्शन हमें गाँवों में भी हो सकते हैं। इसलिये विशुद्ध रूप से किन्हीं भी आधारों को तय करना बहुत कठिनकार्य है।

आधार	ग्रामीण जगत	नगरीय जगत
1. व्यवसाय	कृषकों और उसके परिवारों की संपूर्णता। समुदाय में कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों के कुछ प्रतिनिधि होते हैं।	कृषि के अतिरिक्त मुख्य रूप से उत्पादन, यांत्रिक कार्य, में लगे हुए लोगों की संपूर्णता।

2. पर्यावरण	मानवीय-सामाजिक परिवेश पर प्रकृति का प्रभुत्व, लोगों का प्रकृति से प्रत्यक्ष संबंध।	प्रकृति से पृथकता, प्राकृतिक पर्यावरण के ऊपर मानव निर्मित पर्यावरण का प्रभुत्व। प्रदूषित हवा,पत्थर और लोहा।
3. समुदाय का आकार	छोटे समुदाय, कृषिवाद एवं समुदाय के आकार में नकारात्मक सहसंबंध पाये जाते हैं।	उसी देश और उसी काल में ग्रामीण समुदाय की अपेक्षा नगरीय समुदायों का आकार अपेक्षाकृत बड़ा होता ह नगरीयता और समुदाय के आकार में सकारात्मक सह संबंध पाया जाता ह
4. जनसंख्या का घनत्व	उसी देश और उसी काल में नगरीय समुदाय की अपेक्षा जनसंख्या का घनत्व कम होता ह साधारणतया घनत्व और ग्रामीणता में नकारात्मक सह संबंध पाया जाता ह	ग्रामीण समुदाय की अपेक्षा जनसंख्या का अधिक घनत्व नगरीयता और घनत्व में सकारात्मक सहसंबंध।
5. जनसंख्याकी सजातीयता और वि-जातीयता	नगरीय जनसंख्या की तुलना में ग्रामीण समुदाय में प्रजातीयता तथा मनोवैज्ञानिक सजातीयता अधिक होती ह जबकि विलातीयता से नकारात्मक पारस्परिक संबंध।	एक ही देश व काल में ग्रामीण समुदाय की अपेक्षा अत्यधिक विजातीयता का होना। नगरीयता तथा विजातीयता में सकारात्मक सह संबंध।
6. सामाजिक विभेदीकरण तथा	नगरीय समुदाय की अपेक्षा ग्रामीणसमुदाय में विभेदीकरण तथा स्तरीकरण का कम होना।	विभेदीकरण तथा स्तरीकरण का नगरीयता से सकारात्मक सह संबंध प्रकट होना।

स्तरी—करण 7. गतिशीलता एवं प्रव्रजन	ग्रामीण समुदाय में जनसंख्या की प्रादेशिक, व्यावसायिक और दूसरे प्रकार की गतिशीलता तुलनात्मक दृष्टि से कम तीव्र होती ह साधारणतया गाँवों से नगरों की ओर प्रव्रजन होता ह	तुलनात्मक रूप से तीव्र गतिशीलता और नगरीयता में सकारात्मक सह संबंध। केवल सामाजिक आपदाओं के समय नगरों से गाँवों की ओर प्रवजन।
8. अन्त: क्रिया की व्यवस्था	प्रतिव्यक्ति कम संख्या में संपर्क, समाज के सदस्यों और समाज के लिये अन्त: क्रियाओं का संकुचित क्षेत्र।प्राथमिक संपर्कों का अधिक महत्तव, वक्तिक और अपेक्षाकृत अधिक स्थाई संबंधों की प्रबलता। संबंधों में तुलनात्मक रूप से सरलता और निष्कपटता, मनुष्य के साथ प्राणी की तरह अन्त: क्रिया होती ह	अधिक संख्या में संपर्क, प्रतिव्यक्ति और प्रति समूह अन्त: क्रिया का विस्तृत क्षेत्र, द्वितीयक की प्रधानता, अवक्तिक संबंधों, अवसरवादी और अल्पकालिक संबंधों की प्रबलता, अधिक जटिलता, अनेक रूपता, कृत्रिमता और संबंधों में प्रमाणीकृत औपचारिकता।

➢ **नगरीय संस्कृति**

हमें अलग-अलग समाजों में अलग-अलग प्रकार की संस्कृति देखनेको मिलती ह यहाँ संस्कृति को परिभाषित करना, उसकी विशेषताओं और सिद्धान्तोंपर चर्चा करना प्रासंगिक नहीं होगा। इसमें कोई संदेह नहीं ह कि नगर संस्कृति और सभ्यता के उद्गम स्थल रहे हैं। मानव ने नगरों का निर्माण किया, बदले में नगरों ने मानव को सभ्य बनाया और सभ्यता दी। इस प्रकार संस्कृति और सभ्यता के निर्माण-स्थल नगर ही रहे हैं। परन्तु हमेशा ऐसा नहीं होता। सांस्कृतिक तत्वों का निर्माण, जनजातीय और ग्रामीण समाजों में भी होता रहता ह जिसे रॉबर्ट रडफील्ड ने लघु और वृहत् परम्पराओं के माध्यम से और मकिम मरिअट ने सार्वभौमिकरण और स्थानीयकरण के माध्यम से समझाया

।भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान काल में भारतीय नगरों में ऐसी बहुत सी संस्थाएँ हैं जो हमें हमारी संस्कृति से परिचित कराती हैं। वृहत् परम्पराओं के प्रशिक्षण केन्द्र और आविष्कारों के केन्द्र नगर ही हैं। यदि हम आम व्यक्ति के दृष्टिकोण से भी देखें तो संस्कृति के सतही स्वरूप फैशन के उद्गम स्थल नगर ही हैं। नगरीय संस्कृति की अपनी विशेषताएँ होती हैं और कोई भी नगर विशुद्ध रूप से किसी एक संस्कृति का प्रतिनिधित्व नहीं करता। नगरों की संस्कृति में एकरूपता कम और विविधता अधिक देखने को मिलती है। इनमें से कुछ सामान्य तत्वों को निकाल सकते हैं। **भौतिकवादिता, उपयोगितावादिता, वृहत् उत्पादन, वृहत् उपभोग , दिखाव□की संस्कृति, फैशन, व्यस्तता, उप-संस्कृतियों और पाश्चात्य संस्कृति क□□न्द्र**

- **नगरीय □धिवास**

एक किसान अपनी सुविधा के अनुसार कृषि सम्बन्धी गतिविधियों के लिये जगह का चयन कर सकता है।कियान का यह चयन पूर्णत: व्यक्तिवादी है और अपनी सुविधा के अनुसार उसने यह चयन किया है। परिणामत: ग्रामीण आधिवास के प्रतिमान अव्यवस्थित होते जाते हैं परन्तु नगरों में स्थिति इसके बिल्कुल उलट है। आधिवास का एक निश्चित प्रतिमान है जिसे मापा, देखा और विश्लेषित किया जा सकता है। नगरों का क्षेत्रीय विभेदीकरण, प्राकृतिक और भोगोलिक कारकों पर निर्भर नहीं करता,इनकी कभी-कभार ही कोई भूमिका हो सकती है। मुख्य रूप से सामाजिक आधार ही नगर की बसावट के प्रतिमानों को तय करते हैं। नगरीय आधिवास बहु-कारकीय होता है जो एकाधिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। इसमें एक क्षेत्र विशेष के साथ में एक अलग गतिविधि जुड़ी होती है और इसी कारण संपूर्ण नगर एक प्रकार्यात्मक इकाई के रूप में कार्य करता है।

मेरे इस शोध से नगरीय आधिवास के मुख्य कारकों को मीचे दिए गए चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है:-

चित्र ७.१ नगरीय आधिवास के कारक

कार्यों का विभेदीकरण:- प्रारम्भिक काल में व्यक्ति अपने कार्यस्थल पर ही रहता था। आधुनिक औद्योगिक विकास ने रहने और कार्य के स्थान को अलग-अलग कर दिया, परिवहन साधनों ने इसे और तीव्रतर किया है। अब कार्यस्थल और व्यवसाय मे अलगाव एक आवश्यकता बन गई है। इस अलगाव के नगरीय जीवन पर दूरगामी परिणाम निकले और नगरवासियों का जीवन घर और कार्यस्थल के बीच बंट गया और इसके दिन-प्रतिदिन के कार्यक्रम पर इसका नियंत्रण कम हो गया और घड़ी का नियंत्रण बढ़ गया। इस अलगाव के कारण प्रकार्यात्मक विभेदीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। अब आवास का स्वरूप ही ध्यान में नहीं रखा जाने लगा बल्कि आवास किस क्षेत्र में स्थित है यह भी महत्तवपूर्ण है। इसके साथ ही नगर कई क्षेत्रों में विभाजित होना आरम्भ हो जाता है। जैसे-नागरिक क्षेत्र, वाधिज्यिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र,मनोरंजन क्षेत्र, प्रशासकीय क्षेत्र और सामान्य आवासीय क्षेत्र।

वर्ग/जाति पृथक्करण: नगरों स्पष्ट रूप से क्षेत्रीय विभाजन देखनेको मिलता है। ये क्षेत्र हैं अभिजातों के आवास-स्थल,उच्च जाति के आवास ,आमजनों के घर और गरीबों के झोपड़े,अनुसूचित जाति तथ अनसुचित जनजाति । यह

वर्ग/जाति -विभेद कई तत्वों पर आधारित है जिसमें आवास का स्थान, आकार,प्रकार आदि महत्तवपूर्ण हैं। वर्ग/जाति पृथक्करण वर्तमान ही नहीं बल्कि मध्यकालीन नगरों में भी देखने को मिलता था।

मध्यकालीन नगरों में अभिजातों और संभ्रांतों उच्च जाति का आवास नगर के मध्य में, मध्यवर्गी लोगों के आवास इनके चारों तरफ और गरीब और निम्न जाति की झोंपड़ियाँ नगर की परिधि पर स्थित होती थी। इस प्रकार का प्रतिमान वर्धा नगर में भी देख सकते हैं। जहाँ सिविल लाईन्स,दुर्गा टकीस, मध्य में है और आम नागरिकों की आवासीय बस्तियाँ जातीय मुहल्लों के रूप में चारों तरफ बसी हुई हैं जबकि निम्न जातियों के लोग परिधीय क्षेत्र में हिंद नगर, इतवार बाज़ार,विक्रमशिला नगर में बसे हुए हैं। उच्च वर्ग/जाति के लोग अनुकूल स्थानों पर रहते आए हैं जबकि निम्न वर्ग/जाति के लोग ऐसे स्थानों पर रहते हैं जो उचित नहीं हैं, जैसे रेल की पटरियों के पास जहाँ ध्वनि प्रदूषण है, दुर्गन्ध व धुआँ आदि है। इसमें वर्ग के साथ बस्ती की स्थिति ही नहीं बल्कि रिहायशी जगह का आकार, मकान का स्वरूप आदि भी जुड़े हैं।

सांस्कृतिक अलगाव

वर्ग/जाति पृथक्करण का सिद्धान्त समाज के आर्थिक विभाजन पर आधारित है। व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति के अनुरूप नगर के क्षेत्र और आवास का चयन करता है। प्रत्येक वर्ग की अपनी संस्कृति होती है परन्तु हमेशा ही यह सत्य नहीं होता। कई मामलों में हम पाते हैं कि पर्याप्त धनी व्यक्ति भी ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं जो निम्न या मध्यम श्रेणी के माने जाते हैं और कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हुए भी उच्च श्रेणी के मकानों में रहते हैं। इस प्रकार की व्याख्या सांस्कृतिक आधारपर ही की जा सकती है। वस्तुत: ऐसे व्यक्ति ऐसी परिस्थितियों में इसलिये रहते हैं कि वहाँ उनको अपनी संस्कृति देखने को मिलती है।

वास्तव में व्यक्ति का पालन-पोषण जिस संस्कृति में होता है उसका स्वभाव, उसका व्यक्तित्व, आदत, सोच-विचार, मानसिकता भी उसी के अनुरूप बन जाते हैं। इसीलिए वह अपनी संस्कृति में रहना अधिक पंसद करता है। वहां से अलग होने पर वह सांस्कृतिक अलगाव और असुरक्षित महसूस करता है। यही कारण है कि सीमित साधनों वाले व्यक्ति भी कई बार उच्च श्रेणी के क्षेत्रों में रहते हैं और पर्याप्त साधनोंवाले व्यक्ति भी सामान्य श्रेणी के व्यक्तियों के साथ रहते हैं।

इसे हम वर्धा नगर के उदाहरण के द्वारा समझ सकते हैं जहाँ हम देखते हैं कि सम्पन्न मुस्लिम लोग इतवारा बाज़ार के बाहरी इलाके में रहना पसन्द करते हैं। चारदीवारी में रहने वाले पुरानी पीढ़ी के वर्धा वासी सम्पन्न होने पर भी बाहर के निकटवर्ती क्षेत्रों में नही रहना चाहते।

शोध प्रश्न का परीक्षण:-

जैसा कि प्रथम अध्याय में मैंने बताया था कि मेरा शोध प्रश्न है कि क्या वर्धा ,नगरीय क्षेत्र में जातिय आधार पर अधिवास हुआ है? इस को परखने के लिए मैंने टी-टेस्ट का उपयोग किया है |इसका विवरण निम्नलिखित है|

सारणी ७.१: जाति के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

जाति के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण									
			मोहल्ला						
			सिविल लाईन्स	दुर्गा टाकीस	इतवारा बाज़ार	एस.टी. डिपो रोड	विक्रम शील नगर	हिंदी नगर	कुल
जाति	सामान्य	संख्या	24	20	5	7	2	2	59
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	40.7%	33.9%	8.5%	11.9%	3.4%	1.7%	100.0%
	ओ.बी.सी.	संख्या	9	14	9	14	14	2	61
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	14.8%	23.0%	14.8%	23.0%	23.0%	1.6%	100.0%
	अ.जा.	संख्या	3	3	10	17	21	36	90
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	1.1%	3.4%	11.4%	19.3%	23.9%	40.9%	100.0%
	अ.ज.जा.	संख्या	4	3	16	2	3	2	30
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	13.8%	10.3%	51.7%	6.9%	10.3%	6.9%	100.0%
कुल		संख्या	40	40	40	40	40	40	240
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	16.0%	16.9%	16.9%	16.9%	16.9%	16.9%	100.0%

सारणी ७.२: जाति तथा केन्द्र से दूरी के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

			केन्द्र से दूरी						
			50 mt	200 mt	800 mt	1500 mt	2000 mt	2500 mt	Total
जाति	सामान्य	संख्या	24	20	5	7	2	2	59
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	40.7%	33.9%	8.5%	11.9%	3.4%	1.7%	100.0%
	ओ.बी.सी.	संख्या	9	14	9	14	14	2	61
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	14.8%	23.0%	14.8%	23.0%	23.0%	1.6%	100.0%
	अ.जा.	संख्या	3	3	10	17	21	36	90
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	1.1%	3.4%	11.4%	19.3%	23.9%	40.9%	100.0%
	अ.ज.जा.	संख्या	4	3	16	2	3	2	30
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	13.8%	10.3%	51.7%	6.9%	10.3%	6.9%	100.0%
कुल		संख्या	40	40	39	40	40	40	237
		प्रतिशत अपनी जाति के अंदर	16.9%	16.9%	16.5%	16.9%	16.9%	16.9%	100.0%

सारणी संख्या ७.१ और ७.२ में क्रमशः उत्तरदाताओं कि जाति और केन्द्र से दूरी के □धार पे वितरण दर्शाया गया ह□ इसके विश्लेषण से यह ज्ञात होता ह□कि सामान्य जाति के लोग केन्द्र के निकट (४०.७%) रहतें ह□ओ.बी. सी. तथा अ.ज.जा. के वितरण में समरूपता दिखलाई पद रही ह□और अ.जा. के लोग केन्द्र से २५०० मीटरकि दूरी में अधिक (४०.९%) वितरित हैं|

सारणी ७.३: केन्द्र से दूरी * जाति वितरण का क्रॉस सारणीयन

केन्द्र से दूरी * जाति वितरण का क्रॉस सारणीयन							
			जाति				
मोहल्ला	केन्द्र से दूरी		सामान्य	ओ.बी.सी.	अ.जा.	अ.ज.जा.	कुल
सिविल लाईन्स	50 mt	संख्या	24	9	3	4	40
		प्रतिशत अपनी जाति तथा दूरी के अंदर	63.2%	23.7%	2.6%	10.5%	100.0%
दुर्गा टाकीस	200 mt	संख्या	20	14	3	3	40
		प्रतिशत अपनी जाति तथा दूरी के अंदर	50.0%	35.0%	7.5%	7.5%	100.0%
□तवारा बाज़ार	800 mt	संख्या	5	9	10	16	40
		प्रतिशत अपनी जाति तथा दूरी के अंदर	12.8%	23.1%	25.6%	38.5%	100.0%
एस.टी. डिपो रोड	1500 mt	संख्या	7	14	17	2	40
		प्रतिशत अपनी जाति तथा दूरी के अंदर	17.5%	35.0%	42.5%	5.0%	100.0%
विक्रम शील नगर	2000 mt	संख्या	2	14	21	3	40
		प्रतिशत अपनी जाति तथा दूरी के अंदर	5.0%	35.0%	52.5%	7.5%	100.0%
हिंद नगर	2500 mt	संख्या	1	1	36	2	40
		प्रतिशत अपनी जाति तथा दूरी के अंदर	2.5%	2.5%	90.0%	5.0%	100.0%
कुल		संख्या	59	61	90	30	240
		प्रतिशत अपनी जाति तथा दूरी के अंदर	24.9%	25.7%	37.1%	12.2%	100.0%

सारणी ७.४ t- test सारणी

		Paired Differences					t	df
		Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	95% Confidence Interval of the Difference			
					Lower	Upper		
Pair 1	**केन्द्र से दूरी * जाति वितरण**	1.156	1.548	.101	.958	1.354	11.501	239

इस प्रकार t- value 11.501 और df 239 के □धार पर यह निष्कर्ष लगाया जा सकता ह□कि केन्द्र से दूरी तथा जाति वितरण में अंतरसंबंध प्रभावशाली (significant) ह□अर्थात वर्धा ,नगरीय क्षेत्र में जातिय □धार पर अधिवास हु□ ह□

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता ह□कि नगरीय क्षेत्रों में जाति की कई विशेषताओं एवं प्रतिबंधों में पर्याप्त शिथिलता देखने को मिलती ह□ज□से खानपान तथा व्यवसाय संबंधी नियमों में व्यापक परिवर्तन □ये हैं। नई अर्थव्यवस्था में विभिन्न जाति के लोग एक कारखाने में या एक कार्यालय में साथ-साथ काम करते हैं, क□न्टीन में एक ही साथ खाना खाते हैं। उच्च जाति के व्यक्तियों को परम्परागत रूप से अपवित्र समझे जाने वाले व्यवसायों को करते हुए देखा जा सकता ह□ज□से जूतों के वृहत शोरूमों के मालिक अब उच्च जाति के लोग देखने को मिल जायेंगे। कई मामलों में लचीलापन □ गया ह□और कई कठोरताएँ टूट गई हैं, परन्तु जाति की कई विशेषताएँ नगरों में अभी भी अपरिवर्तित सी ही हैं। □ज भी नगरीय माता-पिता अपने बच्चों के लिये जीवनसाथी की तलाश प्रमुखत: अपनी ही जाति में करते हैं अर्थात् जाति अभी भी अन्त: विवाही समूह ह□और साथ ही सदस्यता भी जन्म से ही निर्धारित हो रही ह□इसी प्रकार जिस तरह ग्रामीण क्षेत्रों में जातीय □धार पर □धिवास होता ह□उसी प्रकार नगरीय क्षेत्रों में भी कार्यों का विभेदीकरण, सांस्कृातिक अलगाव और वर्ग/जाति पृथक्करण अर्थात जातीय □धार पर अधिवास देखने को मिलता ह□इस प्रकार जाति-व्यवस्था में परिवर्तन और निरंतरता नगरीय समाजों में भी बनी हुई ह□